Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 GISRRJ | Volume 1 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

विकास की राह पर जनजातीय कोल : सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तन

Dr. Jai Shankar Prasad Singh
Department of Geography, Associate Prof. and Head, V. K. S. U. Ara, Bihar, India

क्षणे–क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।
(क्षण–क्षण में नवीनता व परिवर्तन ही प्रकृति की रमणीयता का आधार है।)

संस्कृत महाकवि माघ की यह पंक्ति इसी ओर संकेत करती है, कि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत एवं अटल नियम है। पृथ्वी के भौतिक भू–दृश्यों में भी परिवर्तन घटित होते रहते हैं। चूँकि मानव एक ऐसा सजीव तत्व है, जो धरातल पर दूर–दूर तक परिवर्तन करता रहता है। मानव द्वारा निर्मित सांस्कृतिक भूदृश्य; परिवर्तन का एक अच्छा उदाहरण है। मानवीय समाज एवं प्राकृतिक जीवन्तता का राज़ भी परिवर्तन है। वर्तमान समय में जहाँ एक ओर हमारा देश तकनीकी स्तर पर, प्रौद्योगिकी एवं औद्योगिक विकास में विश्व के अन्य देशों की तुलना में बराबरी कर रहा है, वहीं दूसरी ओर देश के बहुत से ऐसे भू–भाग हैं, जिनमें निवास करने वाली जनजातियों में भी सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवर्तन हो रहें हैं। समकालीन समय में मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्टार्ट अप, स्टैण्ड अप, डिजिटल इंडिया हो अथवा कौशल विकास की अवधारणा सभी के माध्यम से विकास के सोपानों पर परिवर्तन की आहट को महसूस की जा सकती है। आज के विकसित साधन (अभिगम्यता एवं संचार, टलीफोन एवं मोबाइल, कम्प्यूटर, इण्टरनेट आदि) व्यापार एवं वाणिज्य, उद्योग, सघन कृषि तथा खनन कार्य की रीति आदि ने जनजातीय प्रवृत्तियों के परिवर्तन पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभाव डाला है।

(प्रस्तुत शोधपत्र में उत्तर–प्रदेश राज्य के बुन्देलखण्ड में स्थित चित्रकूट (कर्वी) जिले के 'पाठा' क्षेत्र में निवास करने वाली कोल जनजाति में हो रहे परिवर्तनों में परितीय प्रभावों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।) पाठा का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2918.27 वर्ग किमी. है। यहाँ के भौगोलिक सरंचना पठारी एवं उच्च स्थलीय होने के कारण शुष्क एवं उष्ण प्रकार की जलवायु पायी जाती है। पाठा क्षेत्र में निवास करने वाले कोल द्रविड़ नृजातीय वंशज के कहे जाते हैं तथा ये अपने को शबरी का वंशज भी मानते हैं। खनिज एवं वन सम्पदा की दृष्टि से यह क्षेत्र काफी सम्पन्न हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जहाँ एक ओर कोल सम्पूर्ण वनीय क्षेत्र पर अपना आधिपत्य समझते थे और वनोत्पाद से जीवनयापन करते थे, वहीं दूसरी ओर वर्तमान समय में पाठा के खनन कार्य में संलग्न क्षेत्र में सम्पन्न एवं प्रभावशाली लोगों के मालिकाना हक बना लेने के कारण कोल असहाय हो गए हैं। भौतिकवादी व्यक्तियों के बीच कार्य करके आर्थिक दृष्टि से कोल मजदूर भले ही सम्पन्न नहीं हो पाए हों, लेकिन सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से परिवर्तन की झलक स्पष्ट दिखना प्रारंभ हुई है। यह परिवर्तन रहन–सहन, शिक्षा, आवासीय व्यवस्था, कृषि पद्धति,

राजनीतिक चेतना, मृत्यु एवं विवाह संस्कारों पर स्पष्टतः परिलक्षित होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में कोलों की पारम्परिक जीवनशैली अवलोकन प्रस्तुत किया गया है।

समाज में होने वाले परिवर्तनों के आधार व प्रवृत्ति :–

कोल समाज में होने वाले परिवर्तनों के विश्लेषण से पूर्व किसी भी समाज में फलीभूत होने वाले परिवर्तनों की पृष्ठभूमि को समझना अपरिहार्य हो जाता है, जिससे विश्लेषण गतिविधियों में परिवर्तन में मूल कारकों तक पहुँच पाये। प्रसिद्ध समाजशास्त्री 'हिन्द' का विचार था, कि वे कारण जो किसी प्रकार के समाज को पूर्ण औद्योगिक दशा में बदलते हैं, सभी प्रकार की संस्कृतियों में समान रूप से लागू होते हैं। इनके अनुसार तीन कारण विचारणीय हैः–

अ. उपयोग के क्षेत्र में आशाएँ।
ब. आर्थिक कृत्यों से संबंधित मनोवृत्ति।
स. समाज का प्रौद्योगिकीय विस्तार/सार।

पूर्ण प्रौद्योगिक या परंपरागत समाज में ये तीनों कारण या तो स्थिर रहते हैं, या निष्क्रिय होते हैं। उनमें एक समन्वय होता है। इसके इतर जब कोई समाज औद्योगिक स्तर को प्राप्त करने का शुभारम्भ करता है, उस समय उपभोग सम्बन्धी आशाऐं बढ़तीं हैं, किन्तु उत्पादन अथवा आर्थिक कृतित्व संबंधी मनोवृत्ति में उस अनुरूप में परिवर्तन नहीं हो पाता हैं इस अवकाश को दूर करने हेतु औद्योगिक विकास किया जाता है। सामाजिक विकास संबधी प्रतिविधियाँ इसी के साथ प्रारंभ हो जाती हैं।

उपभोग के क्षेत्र में परिवर्तनों को देखें तो इसके लिए तीन समूह उत्तरदायी हैं; **प्रथम प्रकार का समूह,** जिनकी समाज में कोई स्थिति नहीं है, वे विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं को अपने लिए चुन लेते हैं, उनका यह विश्वास है कि ऐसा करने से उनकी सामाजिक स्थिति तथा व्यक्तिगत परिस्थिति में परिवर्तन होगा। तथापि महत्वकांक्षा की कमी के कारण अपनी भूमिका को परिवर्तित करने की नहीं सोचते।

द्वितीय प्रकार का समूह, जिनकी परम्परागत परिस्थिति ऊँची है। इस स्थिति को बनाये रखने के लिए वे उपभोग के नए साधनों का प्रयोग करते हैं। ऐसा वे अपनी मौलिक एवं परम्परागत विशेषताओं को दृष्टिगत रखते हुए करती हैं। इन लोगों के परिवर्तन के मूल कारण यही हैं कि वे सिद्ध करना चाहते हैं कि वे 'हेय' नहीं हैं।

द्वितीय प्रकार का समूह, ये वह समूह है जो अपने आपको नवीन मध्यम वर्गीय करता है। यह वर्ग अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाये रखने के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं के आधुनिकतम उपलब्धियों को स्वीकार करता है। पूरा समाज जागरुक हो जाता है व विकास की मुख्य धारा से जुड़ जाता है।

हिन्द ने निष्कर्षतः यह पाया है कि, **''औद्योगिक अवस्था नये प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों को जन्म देती है, जिसमें वर्ग चेतना पायी जाती है, यह चेतना सामान्य हितों पर आधारित होती है।''**

इस नवीन संरचना में जो नई विधा प्रस्तुत होती है उसमें भौगोलिक पर्यावरण व विकसित संस्कृति तथा समाज की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है।

कोल समाज में दृष्टिगत समयानुकूल परिवर्तनों का तुलनात्मक अध्ययन :–
जनजाति या वन्यजाति को आदिवासी, वनवासी या गिरिजन आदि नामों से जाना जाता है। ये लोग कबीलों एवं वनीय क्षेत्रों में निवास करते आए हैं, जिसके कारण सभ्य समाज में होने वाले परिवर्तनों से वंचित रहे हैं। कोल जनजाति, जिनकी जीविका पूर्णरुपेण वनों या वनीय उपजों पर निर्भर रही है, परन्तु **वन सरंक्षण अधिनियम (1980 व 1988)** के पारित हो जाने के कारण वन से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के साधनों को प्राप्त करने से प्रतिबन्धित कर दिए गए हैं, फलस्वरूप उन्हें औद्योगिक प्रधान समाज के सम्पर्क में आना अपरिहार्य हो गया है और उनमें स्थैतिक, व्यवसायिक, क्षैतिजीय एवं उदग्र गतिशीलता में वृद्धि हो गई है।

1. परम्परागत आवासीय व्यवस्था में परिवर्तन :

वर्तमान समय में कोल समाज की परम्परागत बसाहट का स्वरूप बदला हुआ है। अब इनके आवास प्रभुत्व सम्पन्न समाज की बस्तियों, ग्रामों, कस्बों एवं नगरों में धीरे–धीरे समाहित होने लगे हैं। उत्तर–प्रदेश पंचायत राज अधिनियम के अनुसार प्रदेश में छोटे–छोटे गाँव, पुरवे एवं मौजों के ग्राम पंचायतों के निर्माण हेतु सम्मिलित किया गया है। अतः ऐसी बहुत ही कम ग्राम सभाएं हैं, जिनमें मात्र कोल निवास करते हों। पाठा की अधिकांश ग्रामसभाएं छोटे–छोटे मजरों को मिलाकर बनायी गई हैं। इनमें कोल मजरों की संख्या अधिक है। पाठा क्षेत्र के कोल गाँवों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–

ग्रामीण प्रतिरूप–

प्रथम श्रेणी–

घने जंगलों में आवासित गांव, जिनके आस–पास दूसरी जाति के लोगों की बस्तियां नहीं हैं। कम संख्या वाले इन गांवों के कोल अन्य गांवों के कोलों से संपर्क स्थापित किए रहते हैं।

द्वितीय श्रेणी–

घने जंगलों के मध्य किन्तु समृद्ध कृषकों के कृषित भूमि के समीप स्थित अधिवास, जिनमें रहने वाले कोल कृषकों के लिए कार्य करते हैं। कृषकों के कारिंदे भी गांव में खेती का कार्य देखते हैं तथा कोलों पर नियंत्रण रखते हैं।

तृतीय श्रेणी–

वे अधिवास जिन्हें विकास केन्द्र या सेवा केन्द्र के रूप में जाना जाता है। इन सघन बस्तियों के समीप ही कोलों के आवास पाए जाते हैं। यहाँ आदिवासी कोल व्यापारिक, दुकानों व अन्य कार्यों में मजदूरी कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त अपने आवासों के समीप

छोटी दुकान आदि की स्थापना किए हुए हैं, जहां रोजमर्रा में प्रयुक्त होने वाली वस्तुएं प्राप्त होती हैं। अतः कहा जा सकता है कि व्यापार की ओर भी उन्मुख होने लगे हैं।

परिवर्तन के कारण ही कोलों के आवासों के निर्माण में ईंट, पत्थरों, सीमेण्ट एवं सरिया का प्रयोग होने लगा है। चूंकि पाठा क्षेत्र पठारी भू–भाग है, अतः पत्थर आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, किन्तु छतों के निर्माण में वनीय छटावन का प्रयोग करते हैं। इनके आवास अन्य जातियों के आवासों के समीप बनाए जाने लगे हैं। इस प्रकार कोल अपने आवासों के निर्माण में गैर–कोलों का अनुसरण करने लगे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि कोलों के आवासों में परिवर्तन होने लगा है। इसके अलावा उ.प्र. राज्य सरकार द्वारा निर्मित कोलानों का प्रयोग कुछ कोल परिवार करने लगे हैं। राज्य सरकार द्वारा इनके आवास निर्माण में आर्थिक मदद प्रदान की जाती है।

2. कृषिगत परिवर्तन :

पाठा क्षेत्र की भूमि का वितरण विश्लेषण बहुत ही आसान है। क्षेत्र की सिचिंत एवं उपजाऊ भूमि सवर्ण जातियों के पास है, जबकि असिंचित भूमि कोलों के पास है। उच्च जातियों के पास इतनी अधिक भूमि है कि वे स्वयं कृषि कार्य न करके बटाई पर भूमि देते हैं। ये बटाईदार कोल ही होते हैं। जो कोल भूमिहीन थे, उन्हें पट्टे की भूमि उपलब्ध करायी गई है। भूमि के प्रति कोलों का लगाव अब बढ़ता जा रहा है। वे चाहते हैं कि जैसे भी हो कुछ भूमि प्राप्त हो जाए। पूर्व में इनका कृषि कार्य परम्परागत तथा आदिवासी शैली का था। अब ऐसा नहीं है। ये मजदूरी के बदले बड़े किसानों से आधुनिक उपकरण एवं उन्नत किस्म के बीज, उवर्रक एवं सिंचाई की सुविधाओं का प्रयोग करने लगे हैं। जो कस्बों में रहते हैं, वे बाजार में मजदूरी का कार्य दिहाड़ी पर करते हैं। उनका लगाव कृषि के प्रति नहीं है। पाठा के कोलों की सन् 1962 से अब तक अनेक कालोनियों का निर्माण कर स्थायी रूप से बसाकर कृषि के प्रति उनका रुझान पैदा करने का प्रयास किया गया है।

पूर्व समय से खाद्यान्न की कमी महसूस करने वाला कोल समाज कृषि कार्य कर अपना जीवन गुजारने में सक्षम हो चला है। कोल महिलाऐं भी कृषि कार्य में पुरुषों का पूर्ण सहयोग करती हैं। वर्ष के अधिकांश खाली दिनों में महिलाऐं लकड़ी काटने तथा तेन्दू के पत्ते तोड़ने का कार्य करती हैं। पत्ते तोड़ने का कार्य दिहाड़ी पर किया जाता है। ठेकेदारों द्वारा मजदूरी का पैसा समय से भुगतान न करने पर चुप बैठने वाले कोल अब उच्च अधिकारियों तक शिकायत करने में नहीं डरते हैं। कोल अपने शोषण का मतलब आसानी से समझते हैं। कोल संगठन इस दिशा में एक आशा की किरण है।

3. राजनीतिक समझ में विस्तार

कोल समाज, जिनका इतिहास एवं भूगोल तथा अर्थशास्त्र सभी कुछ भूख अर्थात् उदरपूर्ति तक सन्दर्भित रहा है और क्षुदापूर्ति के नाम पर कोलों के मतदान प्रक्रिया को

सदैव प्रभावित किया जाता रहा है। वर्तमान समय में कोलों के अंदर जागरुकता आई है। 'पाठा' क्षेत्र वही है, जहाँ समय–समय पर दलित कोलों ने भी इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व विधान सभा के सदस्य के रूप में किया है। स्वतंत्रता संग्राम में कांग्रेस की अहम् भूमिका होने के कारण इसी पार्टी की ओर कोल भी प्रभावित रहते थे किन्तु समय के परिवर्तन के साथ कोलों में आत्मविश्वास जागृत हुआ। **खरौंद निवासी इन्द्रपाल कोल ने जनसंघ पार्टी के उम्मीदवाद के रूप में सन् 1967 में चुनाव लड़कर इस क्षेत्र से निर्वाचित होकर, प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त किया था।** तथापि सामान्य निर्वाचन प्रक्रिया में अत्यधिक धनबल का बोलबाला होने के कारण आर्थिक रूप से कमज़ोर कोल अपनी दावेदारी से पीछे हट जाते हैं। मतदाता के रूप में इनकी संख्या क्षेत्र में एक निर्णायक अदा करती है।

4– जीवन स्तर में परिवर्तन :

विगत कुछ वर्षों में जब से कोल कृषि कार्य से जुड़े हैं, तब से इनमें स्थायित्व आया है, जिससे इनके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अन्तर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। यह परिवर्तन पुरुषों एवं महिलाओं दोनों में देखा जा सकता है। महिलाऐं पुरुषों की अपेक्षा अधिक संजने–संवरने पर ध्यान देती हैं। साड़ी युवतियों के चलन में आम हो गया है। युवक कोल पैंट, शर्ट यहाँ तक की जींस का प्रयोग करने लगे हैं। सामान्य कोल महिलाऐं चप्पलें पहनने लगीं हैं।

महिलाओं पर आभूषणों पर भी पड़ा है। ग्रामीण अंचलों में प्रयोग आने वाले कम कीमत के आभूषण कोलों की चौखट पर दस्तक देने लगे हैं। चूड़ियाँ तो कोल महिलाऐं पहनती ही हैं, अन्य दूसरे आभूषणों में नाक में बुलाक, कान में कानफूल, हाथ में कड़ा, पैर में पायल, चुरवा, बिछियाँ आदि प्रयोग में लाती हैं। पुरुष अंगूठी धारण करने लगे हैं। कभी–कभी रंगीन धागे का माला एवं उसमें चन्द्र आकार का लाकेट भी पहनते हैं। कर्ण छेदन संस्कार के कारण कुछ लोग कान में बाली पहनते हैं। यह परिवर्तन के वातावरण को स्पष्ट करता है।

वर्ष के अधिकांश दिनों में एक समय का भोजन पाकर संतुष्ट होने वाला कोल आज दोनों समय का भोजन भरपेट करता है। मोटा अनाज, जिसमें ज्वार, बाजरा, चना, मसूर, चावल आदि इसका मुख्य भोजन है। गेहूं की रोटियां व अरहर की दाल, जिसका सेवन तीज–त्यौहार पर करते थे, वर्तमान समय में सामान्य भोजन के अंतर्गत आने लगा है। चकबंदी के बाद प्राप्त ग्राम समाज की भूमि के पट्टों में कृषि का कार्य करने वाले कोल गेहूं, चना, मसूर, चावल आदि की खेती करने लगे हैं। भोजन के रूप में दाल रोटी एवं भरपूर हरी सब्जियाँ, जिन्हें आंगन, घरों के आस–पड़ोस में उगा लेते हैं, का प्रयोग करते हैं। अतः इनके खान–पान में पूर्ण परिवर्तन आया है। बीच–बीच में मांसाहारी भोजन भी करते हैं, जिसमें मुर्गी–मुर्गा तथा जंगली कबूतरों का मांस प्रयोग किया जाता है। अच्छे प्रकार के लिए ये कोल अब त्योहारों का इंतज़ार नहीं करते।

इसी क्रम में, लगभग एक दशक पूर्व कोलों के बच्चों को शिक्षित करने हेतु आश्रम पद्धति विद्यालय की स्थापना मानिकपुर में की गई है। इतना ही नहीं कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा भी कोलों की बस्तियों में विद्यालय संचालित किए जा रहे हैं। इन विद्यालयों में कोल अपने बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने हेतु नियमित भेज रहे हैं। लोग चिट्ठी एवं दैनिक समाचार पत्रों का अध्ययन करने लगे हैं। रेडियो से राजनीतिक गतिविधियों की जानकारी लेते हुए उन्हे देखा जा सकता है। पूर्व में जो कोल पढ़ाई–लिखाई के नाम से डरते थे अब ऐसा नहीं है। भविष्य की चिंता करते हुए शिक्षा की ओर रुझान बढ़ा है।

यद्यपि वर्तमान समय में कोल प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष रूप से वनों से लाभान्वित होते रहते हैं, किन्तु पुरातन वह आत्मीय संबंध संभवतः अदृश्य हो चुका है। परम्परागत अधिकारों व रियायतों को वे अपनी आय के आंशिक सम्पूरक के रूप में उपभोग करते हैं। प्रायः सभी वैज्ञानिक व शोधकर्ता ये स्वीकारते हैं कि, भारतीय निर्धनता की समस्या अति जटिल है, ऐसे परिदृश्य में कोल समाज सभ्यता के आदिम चरित्र को प्रस्तुत करता हुआ परिवर्तन के दौर में विकास की तलाश कर रहा सा दिखाई देता है। ऐसे में निःसंदेह उनके हित में आर्थिक व सामाजिक आधारों की पुनर्सरंचना होनी चाहिए। इसके लिए भूमि सुधार की आवश्यकता के साथ न्याय निर्णयन में जनजातीय सज़गता को और सशक्त बनाना होगा।

संदर्भ :

1. डॉ. स्वामी प्रसाद पाठा के कोलों के विकास के अवरोधक कारक (शोध प्रबंध) बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0) 1999
2. नाग, (डॉ.) जसवन्तः पाठा के कोलों में राजनीतिक चेतना एवं सहभागिता (1988) शोध प्रबंध, वाराणसी, काशी विद्यापीठ।
3. डोगरा, भारत : 'पाठा' सूखे खेत प्सासे दिल पत्रिका (1992)
4. डॉ. हसन, अमीरः कोल्स ऑफ पाठा (1972) इलाहाबाद किताब महल।
5. डॉ. बलराम : जनजातीय समाज की आवासीय व्यवस्था पाठा के विशेष संदर्भ में (2003) सोसल एक्सनट्रस्ट, नई दिल्ली।